अध्याय - चतुर्थ

अध्याय चतुर्थ

4.1 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तावना

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के इस अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण करके उनकी व्याख्या की गई है एवं सार्थक अन्तर ज्ञात किया गया है।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या उसके उद्देश्य एवं परिकल्पना के आधार पर निम्नलिखित है।

1. उद्देश्य

वर्तमान में केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड शिक्षा में चलाये जा रहे सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का अध्ययन

शिक्षकों के विचार

1. सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की चुनौतियों पर शिक्षकों के विचार –

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर शिक्षकों ने चुनोतियों के बारे में निम्न विचार प्रस्तुत किये सभी शिक्षकों के विचारों के अंतर भी है और समानता भी है शिक्षकों का मानना है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन बहुत कठिन प्रतिक्रयाँ तथा इसमें सभी विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक क्षेत्रों के मूल्यांकन का लेखा जोखा रखना पड़ता है जिसमें काफी लम्बे समय की आवश्यकता पड़ती है। इसमें प्रमुख रूप से फारमेटिव एवं सवमेटिव यह दो चुनोतियां प्रमुख है तथा सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के द्वारा विद्याथियों में अच्छे व्यवहार का विकास करने में सहायक है कुछ शिक्षकों को ऐसा मानना है कि यह बहुत गहन अध्ययन प्रणाली है। तथा छात्रों की शाला में उपस्थित एवं उनका व्यक्तिगत विकास करने के लिए यह प्रणाली बहुत उपयोगी है।

2. सत्र को फारमेटिव एवं सवमेटिव ऐसेसमेन्ट में बाटा गया है उस में क्या-क्या प्रतिक्रियाऐं है इस शिक्षकों का मत –

शिक्षकों का मानना है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के तहत फारमेटिव ऐसेसमेन्ट एवं सवमेटिव ऐसेसमेन्ट में पेन, पेपर परीक्षण एवं उपलब्धियां प्रस्तुतीकरण समूह वार्तालाप आदि के माध्यम से विद्यार्थियों की उपलब्धि का परीक्षण किया जाता है एवं जो निर्देशन केन्द्रीय शिक्षा समिति द्वारा मूल्यांकन के लिये निर्धारित किये गये है उनको ही अपनाया जाता है। मौलिकता व परियोजना कार्य की जॉच, शैक्षिक योग्यता की जॉच आदि को किया जाता है एवं दोनों ही फोरमेटिव एवं समेटिव ऐसेसमेन्ट के आधार पर अलग–अलग तरह की उपलब्धियों की जांच की जाती है।

सेमिस्ट में फारमेटिव 1,2 परीक्षण कितनी बार होता है इस पर शिक्षकों का मत है कि एक एक बार फारमेटिव एवं एक बार समेटिव होता है इसके अतिरिक्त इसमें पेन पेपर परीक्षण एंव अलग प्रतिक्रियाएं चार या पांच बार होती है।

3. विद्यार्थियों का मौखिक परीक्षण प्रतिक्रया –

शिक्षकों का मानना है कि विद्यार्थियों का मौखिक परीक्षण लेना बहुत आवश्यक है विषय वस्तु के आधार पर छोटे–छोटे प्रश्नों को पूछना चाहिए जिनके उत्तर भी छोटे हो जिससे विद्यार्थी सरलतापूर्ण ढंग से उनके उत्तर दे सके ज्यादतर शिक्षकों का मत है कि विद्यार्थियों का मौखिक परीक्षण लेने से विद्यार्थियों में शिक्षकों एवं विषय के प्रति समस्यायें समाप्त होती है वार्तालाप कौशल का विकास होता है एवं बातचीत के माध्यमों से मानसिक विकास की गति तीब्र हो जाती है। विद्यार्थियों का परिक्षण लेने से पहले उनकी अध्ययन क्षमता को अवश्य माप लेना चाहिए एवं विद्यार्थियों को याद रखने की क्षमता को पूर्ण रूप से ध्यान में रखना चाहिये जिसे अध्याय को तुरन्त ही समाप्त कराया गया हो उसी के आधार पर प्रश्नों को पूछना चाहिए एवं विद्यार्थियों का भाषा कौशल क्या है एवं वह किस तरह से प्रश्न का उत्तर देते है। कविता कैसी ही यदि कविता रोमांचक है तो विद्यार्थी प्रश्नों को रूचि के साथ सुनकर उसका उत्तर देते है।

4. विद्यार्थियों का शुद्वता परीक्षण –

महीने में लगभग हर दिन विद्यार्थियों की शुद्धता परीक्षण किया जाता है जिसमें विद्यार्थियों की शरीरिक सफाई, कपड़ों की सफाई, जूते की सफाई आदि को शामिल किया जाता है इसके अंदर विद्यार्थियों का शुद्धता विकास परीक्षण का अध्ययन किया जाता है।

5. प्रतिदिन अवलोकन से विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन –

प्रतिदिन विद्यार्थियों के चहुमुखी परीक्षण के परिणाम स्वरूप उनमें कुछ सकारात्मक और नकारात्मक परिवर्तन आया है।

6. विद्यार्थियों का आपसी व्यवहार –

विद्यार्थियों का आपस में व्यवहार काफी सुधरा हुआ है एवं विद्यार्थी का आपसी व्यवहार एक दूसरे की मदद करना एवं गृहकार्य को कराने में सलाह देना एवं आपस में अनुशासित व्यवस्था का पालन करना एक साथ खेलना एवं साथ बैठकर अध्ययन करना इन सभी बातों का विकास विद्यार्थी की आपसी व्यवहार में देखने को मिलता है।

7. लिखित परीक्षण प्रतिक्रिया –

शिक्षकों का मानना है कि लिखित परीक्षण माह में लगभग तीन, चार बार लेना चाहिये एवं विषय वस्तु के हिसाब से लिखित परीक्षण में प्रश्नों का निर्माण कराना चाहिए।

8. सेमेस्टर परीक्षण के कारण शिक्षकों के कार्य में परिवर्तन –

शिक्षकों का मानना है कि सेमेस्टर परीक्षण के कारण शिक्षा के कार्यो में बहुत परिवर्तन आया है जिसमें कुछ धनात्मक एवं कुछ ऋणात्मक परिवर्तन है शिक्षकों को परीक्षण के पहले एवं परीक्षण के बाद का लिखित व्यवहार रखना पड़ता है एवं हमारे द्वारा विद्यार्थियों के मूल्यांकन की प्रतिक्रियां परिवर्तित हो गई है एवं भार बहुत ज्यादा बड गया है छात्रों द्वारा अपने शिक्षण कार्यो को समय पर पूरा किया जाने लगा है। एवं उनका कार्य सरल हो गया है एवं वह पहले से ज्यादा जागरूक एवं व्यक्तिगत रूप से कार्य करने की प्रतिक्रिया का विकास हुआ है।

9. प्रयोगात्मक कार्यो के संबंध में मत –

प्रयोगात्मक कार्यो के अंदर जो ऐसेसमेन्ट जमा कराया जाता है उसकी विषय वस्तु पाठ्यक्रम के अनुसार होती है एवं जिस तरह का टोपिक दिया जाता है उसी के आधार पर इसे पूरा करना होता है। तथा इस के अंदर अलग–अलग तरह का अवलोकन कराया जाता है। जैसे मौखिक विचार, सृजनात्मक लेखन, समसामाजिक विषयों पर लेख छात्र रूचि के आधार पर अलग, अलग लेख लिखने के लिये कहां जाता है प्रयोगात्मक कार्यो में विद्यार्थियों के उस विषय पर सम्पूर्ण विचारों का अध्ययन करने को कहां जाता है।

10. अनुशासन व्यवस्था में परिवर्तन –

विद्यार्थियों के कक्षा में देर से आने या जल्दी से भाग जाने की परिस्थिति में

शिक्षकों की यह कोशिश रहती है कि सभी विद्यार्थी रोज विद्यालय आये एवं बहुत कम विद्यार्थी ऐसे है जो शाला में ज्यादा अवकाश पर रहते है लगभग सभी विद्यार्थियों को रोज आने के लिये कहां जाता है एवं उन्हें नये नये प्रोत्साहन दिये जाते है जिस कारण वह कभी अवकाश न करे तथा यदि कोई विद्यार्थी अनुशासन को तोड़ता है तो फिर उसके पीछे के कारणों का पता लगाया जाता है जहां तक हो सके उसकी समस्याओं को समझ कर उसका उपचार कराया जाता है एवं निदानात्मक प्रतिक्रियां का अनुसरण किया जाता है।

11. मापन प्रतिक्रिया का विद्यार्थियों पर प्रभाव –

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों पर सकारात्मक प्रभाव देखेन को मिलता है एवं विद्यार्थी स्वयं का अवलोकन करवाने में रूचि दिखाते है एवं उनका व्यक्तिगत रूप से विकास हुआ है और वह पढ़ाई के प्रति पहले से अधिक जागरूक हो गये है एवं वह हर तरह की शैक्षिक प्रतिक्रियां में भाग लेने लगे है। पहले से कहीं अधिक सक्षमता का विकास हुआ है।

12. सामाजिक गुणों एव रूचि का अध्ययन –

शैक्षिक एवं सहशैक्षिक विकास के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों का चहुमुखी विकास हो गया है उनमें कई तरह के सामाजिक गुणों का विकास हुआ है जैसे व्यक्तित्व का विकास एक दूसरे की मदद करना मिलकर कार्य करना, कक्षागत कार्यो में जिम्मेदार बनना एवं सामाजिक महत्व को जानना आदि विद्यार्थियों की रूचि में उनकी कलात्मक, संगीत, नृत्य, खेलकूद चित्रकला आदि से संबंधित रूचि का अध्ययन किया जाता है इसके लिए विद्यालय में एक या दो शिक्षक इस क्षेत्र में अवश्य पदस्थ किये जाते है। उनकी रूचि को जाना जाता है एवं उन्हे प्रेरित किया जाता है।

परिकल्पना क्रमांक 1

सतत् एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभीवृतियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति छात्रों एवं छात्राओं की अभिवृतियों के परीक्षण के प्राप्तांकों का माध्य, प्रमाण विचलन, मुक्तांश टी परीक्षण दर्शन सारणी

सारणी क्रमांक 4.2.1

क्रमांक	लिंग	समूह संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	टीमान
1.	छात्र	108	45.53704	7.499909	156	0.915591
2.	छात्राऐं	50	45.4	4.127953		

0.05 पर सार्थकता स्तर = 1.96

निष्कर्ष – तालिका क्रमांक 4.2 में प्रस्तुत आकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभी तृप्तियों का टी परीक्षण का मान 0.91 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तरपर सार्थक नहीं है। इसीलिए यह परिकल्पना स्वीकृत है। इसका तात्पर्य यह है सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति छात्र एवं छात्राओं की अभिवृति में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक 2

सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति महिला शिक्षकों एवं पुरूष शिक्षकों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति महिला शिक्षकों एवं पुरूष शिक्षकों की अभिवृतियों के परीक्षण के प्राप्तांकों का माध्य प्रमाप विचलन मुक्तांश टी परीक्षण दर्शन सारणी

सारणी क्रमांक 4.2.2

क्रमांक	लिंग	समूह संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	टीमान
1.	पुरूष शिक्षक	11	57.90	7.54	18	0.96
2.	महिला शिक्षक	9	52.11	9.70		

0.05 पर सार्थकता स्तर = 2.10

निष्कर्ष – तालिका क्रमांक 4.2.2 में प्रस्तुत आकड़ों का अवलोकन करने में स्पष्ट होता है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की अभिवृति का टी परीक्षण का मान 0.96 हैं जो 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है इसीलिए यह परिकल्पना स्वीकृत है इसका तात्पर्य पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अभिवृति में सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना क्रमांक 3

विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक 4.2.3

सतत एवं व्यापक शिक्षा मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धियों के परीक्षण के प्राप्तांकों का सहसंबंध गुणाक, मुक्तांश चर का दर्शन सारणी

क्रमांक	चर	समूह संख्या	मुक्तांश	टीमान
1.	आत्म अवधारणा	150	298	0.053
2.	शैक्षिक उपलब्धियां	150		

निष्कर्ष – तालिका क्रमांक 4.2.3 में प्रस्तुत आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य सहसंबंध गुणाक का मान 0.053 है। जो सहसंबंध गुणांक तालिका के आधार पर न्यूनतम धनात्मक सहसंबंध है।

इसी कारण यह परिकल्पना निरस्त की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि विद्यार्थियों की आत्म अवधारणा एवं शैक्षिक उपलब्धियों के मध्य न्यूनतम धनात्मक सह संबंध है।

परिकल्पना क्रमांक 4

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं मानसिक तनाव के मध्य संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी क्रमांक 4.2.3

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों एवं मानसिक तनाव के मध्य संबंध में गुणांक मुक्तांश चर का दर्शन सारणी

क्रमांक	चर	समूह संख्या	मुक्तांश	टीमान
1.	मानसिक तनाव	150	298	0.140
2.	शैक्षिक उपलब्धियां	150		

निष्कर्ष – तालिका क्रमांक 4.2.4 में प्रस्तुत आकड़ों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलबिधयों एवं मानसिक तनाव के मध्य सहसंबंध गुणाक का मान 0.140 है जो सहसंबंध गुणाक तालिका के आधार पर न्यूनतम धनात्मक सहसंबंध है अर्थात हमारी परिकल्पना स्वीकृत नहीं है।